Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

समकालीन साहित्य में भारतीय नारी का अस्तित्व और बदलते स्वरूप

Dr. B. Laxmi H.O.D. of Hindi,

Dr. V. S. Krishna Government Degree college (A) Visakhapatnam

Mail ID – buddhalaxmidec77@gmail.com

भारतीय संस्कृति में स्त्री सदैव ही वंदनीय रही हैं। हम ऐसे देश में रहते है, जहाँ नारी को शक्ति स्वरूप माँ दूर्गा के रूप में अराधना की जाती है। जहां राम और कृष्ण से पूर्व सीता और राधा का नाम स्मरित किया जाता है। धन की देवी लक्ष्मी, विद्या देवी सरस्वती की आराधना की जाती है। नारी संस्कारों की संरक्षिका, प्रचारक और पोषक है। प्रेरणा सत्रोत है। ममता का स्वरूप है। सर्वस्व है परंतु आज भी, क्यों नारी के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न है ? क्यों अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षशील है ? क्यों समानता के अधिकार को मांग रही ? क्यों पशुओं के समान खरीदने–बेचने के समाचार पढने को मिल रहा है ? क्यों आज भी नारी आधी रात स्वतंत्र रूप से यात्रा नहीं कर सकती ? उसे केवल यौन संतुष्टि का साधन मात्र समझा जा रहा है।

भारतीय साहित्य में नारी की उपस्थिति अनादिकाल से रही है, किंतु उसकी छवि प्रायः पुरुष दृष्टि द्वारा गढ़ी गई है। वह या तो सती-साध्वी के रूप में पूज्य ठहराई गई या मोहक नायिका के रूप में। आज उपेक्षित नारी खमोश नहीं है, चुप्पी के हाशिए से आगे बढकर बदलाव व परिवर्तन की ओर अग्रसर है। विशेषकर **समकालीन कथा-साहित्य** ने स्त्री को एक **स्वतंत्र व्यक्तित्व** के रूप में प्रस्तुत किया, जो अपने अधिकारों, अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्ष करती है। जैसा कि आलोचक **नामवर सिंह** लिखते हैं – ***"स्त्री विमर्श साहित्य का परिधीय विषय नहीं, बल्कि उसकी केंद्रीय धारा है, क्योंकि साहित्य का कोई भी स्वर तब तक अधूरा है जब तक उसमें आधी आबादी का यथार्थ प्रतिबिंबित न हो।"*** समकालीन कथा-साहित्य, जिसमें उपन्यास और कहानियाँ प्रमुख विधाएँ हैं, जिसमें भारतीय नारी के अस्तित्व को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत किया है।

नारी की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

भारतीय समाज परंपरागत रूप से पितृसत्तात्मक रहा है। स्त्री की पहचान परिवार और विवाह के घेरे में सीमित रही, जहाँ स्त्री की विवाहेतर जीवन को 'अधर्म' और उसकी स्वतंत्र आकांक्षाओं को 'विद्रोही' समझा गया। **प्रेमचंद** ने "निर्मला" उपन्यास में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की त्रासदी को चित्रित किया है। पिता की उम्र के पति, तोताराम के प्रति निर्मला सम्मान भाव तो रखती है परंतु घर और समाज में अकेलापन और अजनबीपन-सा महसूस करती है। धीरे -धीरे निर्मला में पति के प्रति भय और निराशा के भाव बढती जाती है। परिणामतः अंत में दुखद मृत्यु को प्राप्त होती है। यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि स्त्री को सामाजिक ढाँचे ने वस्तु बना दिया था।

4. समकालीन उपन्यासों में नारी का अस्तित्व

मन्नू भंडारी का "आपका बंटी "- इस उपन्यास में नारी के अस्तित्व को दाम्पत्य विघटन की पृष्ठभूमि में देखे गया है। नायिका शेखर की पत्नी सुचित्रा अपने अधिकार और आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ती है।"सुचित्रा के लिए विवाह का अर्थ केवल देह और घर नहीं था, बल्कि एक ऐसी साझेदारी थी जिसमें उसके अस्तित्व

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

को भी मान्यता मिले। "आलोचक **रमेश उपाध्याय** लिखते हैं। "आपका बंटी' में नारी केवल माँ नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्तित्व की प्रतीक है जो अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती है।"

राजेन्द्र यादव की रचना "सारा आकाश "- यह उपन्यास मध्यमवर्गीय दाम्पत्य जीवन की विडंबना को सामने लाता है। पत्नी सुमित्रा अपने अधिकारों के लिए प्रश्न खड़े करती है। "यह घर है या जेल, जहाँ मैं साँस तक नहीं ले सकती?" – सुमित्रा की यह आवाज़ पितृसत्ता पर सीधा प्रहार है। प्रगतिशील और प्रयोगवादी धारा के महत्त्वपूर्ण कथाकार **राजेंद्र यादव** का पहला उपन्यास 'सारा आकाश' (1960) हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन का सूत्रपात करने वाला माना जाता है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन, पति-पत्नी के संबंध, पारिवारिक तनाव और स्त्री की स्थिति को बड़े ही यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस कृति की नायिका **सुवर्णा** भारतीय नारी का वह रूप है जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्षरत है।

1. **पारिवारिक दायित्व का निर्वाह** - सुवर्णा विवाह के पश्चात अपने पति **समर** के परिवार में प्रवेश करती है। वह ससुराल की परंपराओं और संस्कारों के अनुसार ढलने का प्रयास करती है। भारतीय नारी की यह भूमिका उसकी सहनशीलता और परिवार-निष्ठा का प्रतीक है। उपन्यास में बार-बार दिखता है कि सुवर्णा परिवार की मर्यादा बनाए रखने के लिए अपने स्वभाव और भावनाओं को दबा देती है।

2. **समर्पण और सहनशीलता** -भारतीय नारी की परंपरागत छवि 'त्यागमयी' के रूप में सुवर्णा में स्पष्ट दिखाई देती है। समर की शंका, रूखाई और कठोर व्यवहार के बावजूद सुवर्णा परिवार और पति के प्रति कर्तव्य निभाती है। वह पति के प्रेम की प्रतीक्षा करती है और अपने दुखों को भीतर ही भीतर सहती रहती है। यह भारतीय नारी की सहनशीलता और त्याग की परंपरा को उजागर करता है।

3. **स्वाभिमान और आत्मसंघर्ष** - सुवर्णा केवल सहनशील ही नहीं है, उसमें आत्मसम्मान की चेतना भी है। समर द्वारा बार-बार संदेह करने पर वह चुप रहती है, किंतु भीतर-भीतर आत्मसम्मान की आग उसे तोड़ती है। यही आंतरिक विद्रोह उसे भारतीय नारी की बदलती भूमिका की प्रतिनिधि बनाता है।

4. **मौन विरोध** - सुवर्णा सीधे-सीधे विद्रोह नहीं करती, लेकिन उसका मौन ही विरोध है। वह अपनी पीड़ा को शब्दों में नहीं कह पाती, किंतु उसकी खामोशी समर के हृदय में अपराधबोध पैदा करती है। यह भारतीय नारी की वह भूमिका है जहाँ मौन भी एक प्रकार की सामाजिक-मानसिक शक्ति बन जाता है।

5. **भारतीय स्त्री की विडंबना का प्रतीक** - सुवर्णा का जीवन उस भारतीय स्त्री की विडंबना है जो आधुनिक शिक्षा और नई चेतना से परिचित है, परंतु सामाजिक-पारिवारिक बंधनों से मुक्त नहीं होती। वह चाहकर भी अपने 'स्व' को प्रकट नहीं करती। समर के संदेह और समाज की परंपराएँ उसकी स्वतंत्रता को बाधित करती हैं। **डॉ. नामवर सिंह** के अनुसार : -**"सुवर्णा भारतीय नारी की करुण गाथा है, जो मध्यवर्गीय समाज की रूढ़ियों और पति की संकीर्ण मानसिकता के बीच पिसती रहती है।"**

इस प्रकार, 'सारा आकाश' में सुवर्णा का चरित्र भारतीय नारी की परंपरागत भूमिकाओं — त्याग, सहनशीलता और पारिवारिक निष्ठा — को उजागर करता ही है, साथ ही उसके भीतर पल रहे आत्मसम्मान और स्वाधीनता की चाह को भी सामने लाता है। राजेंद्र यादव ने सुवर्णा के माध्यम से भारतीय नारी के उस संघर्षशील स्वरूप को चित्रित किया है जो आज भी स्त्री विमर्श और सामाजिक समानता की चर्चा में अत्यंत प्रासंगिक है।

चित्रा मुद्गल की "आवाँ" - यह उपन्यास श्रमिक आंदोलन की पृष्ठभूमि में स्त्री की सक्रिय भूमिका का चित्रण करता है। यहाँ नारी केवल गृहस्थी में सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष में भी नेतृत्व करती है। चित्रा मुद्गल समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की प्रमुख लेखिका हैं। उनका उपन्यास *'आवाँ'*

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

(1989) मजदूर वर्ग, श्रमिक आंदोलन और समाज की राजनीतिक-आर्थिक जटिलताओं का सजीव दस्तावेज है। इसमें विशेष रूप से स्त्री की स्थिति, उसकी संघर्षशीलता और आत्मसम्मान की खोज को गहनता से चित्रित किया गया है।

1. श्रमजीवी नारी का यथार्थ - 'आवाँ' की नायिकाएँ - फैक्ट्री मजदूर, झुग्गी-बस्ती में रहने वाली स्त्रियाँ हैं अपने परिवार और जीवन-यापन के लिए कठोर परिश्रम करती हैं। वे आर्थिक बोझ उठाकर भारतीय नारी के संघर्षशील रूप को सामने लाती हैं।

2. दोहरी जिम्मेदारी - इन स्त्रियों पर घर और काम दोनों की जिम्मेदारियाँ हैं। वे परिवार पालती हैं और साथ ही पूँजीवादी शोषण का सामना भी करती हैं। यह भारतीय नारी की त्यागमयी और परिश्रमी स्वरूप को दर्शाता है।

3. संघर्ष और प्रतिरोध - 'आवाँ' की स्त्रियाँ चुपचाप अन्याय सहने वाली नहीं हैं। वे अपने अधिकारों और न्याय के लिए आवाज उठाती हैं। आंदोलन और हड़तालों में सक्रिय भागीदारी भारतीय नारी की जागृत चेतना को दर्शाती है।

4. शोषण के खिलाफ खड़ी स्त्री - स्त्रियाँ यहाँ केवल पीड़िता नहीं, बल्कि यथार्थवादी योद्धा के रूप में सामने आती हैं। उनका संघर्ष यह बताता है कि भारतीय नारी अब पारंपरिक दायरे में बंधी नहीं है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक अन्याय के विरुद्ध संगठित होकर खड़ी हो रही है।

इस प्रकार, चित्रा मुद्गल की 'आवाँ' में भारतीय नारी केवल गृहस्थी तक सीमित नहीं, बल्कि संघर्ष, आंदोलन और सामाजिक बदलाव की सक्रिय प्रतिनिधि है। वह श्रमिक वर्ग की शक्ति बनकर सामने आती है और यह दर्शाती है कि **भारतीय नारी अब "मौन और सहनशीलता" से आगे बढ़कर "संघर्षशील सक्रियता" का रूप धारण कर चुकी है।**

मैत्रेयी पुष्पा की "इदन्नमम्" और "चाक" -इन उपन्यासों में ग्रामीण स्त्री का यथार्थ चित्रण है। नायिकाएँ परंपराओं को चुनौती देती हैं। **मैत्रेयी पुष्पा** लिखती हैं – ***"औरत अगर अपनी जड़ें न छोड़े तो कोई आँधी उसे गिरा नहीं सकती।"*** मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएँ ग्रामीण जीवन, स्त्री की दबी हुई आकांक्षाएँ और उसकी जुझारू चेतना का जीवंत दस्तावेज़ हैं। 'इदन्नमम्' और 'चाक' दोनों उपन्यास भारतीय नारी के यथार्थ, संघर्ष और आत्मसम्मान को प्रखरता से प्रस्तुत करते हैं।

'इदन्नमम्' उपन्यास की नायिका **मन्ना** ग्रामीण स्त्री के संघर्ष का प्रतीक है। वह जातिगत शोषण, पितृसत्ता और गरीबी से जूझते हुए अपने अस्तित्व और अधिकारों की लड़ाई लड़ती है। मन्ना का आत्मसम्मान और अपनी पहचान बनाने का प्रयास यह दर्शाता है कि भारतीय नारी अब दबने और चुप रहने वाली नहीं, बल्कि विद्रोही और आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है।

'चाक' उपन्यास में ग्रामीण और पिछड़े समाज की स्त्रियों का चित्रण है, जो पुरुष-प्रधान व्यवस्था में निरंतर संघर्ष करती हैं। स्त्रियाँ यहाँ खेत-खलिहान के काम से लेकर परिवार के बोझ, सब कुछ उठाती हैं। वे अंधविश्वास, हिंसा और शोषण का सामना करते हुए भी अपने अधिकार और सम्मान की लड़ाई जारी रखती हैं। 'चाक की स्त्रियाँ केवल पीड़िता नहीं हैं, वे धीरे-धीरे जागरूक होकर अपने लिए सामाजिक और आर्थिक स्पेस बनाती हैं। इस प्रकार, मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'इदन्नमम्' और 'चाक' में भारतीय नारी अपनी पीढी-दर-पीढी त्यागमयी छवि से निकलकर संघर्षशील, आत्मसम्मानी और विद्रोही रूप में सामने आती है। वह पितृसत्ता और शोषण को चुनौती देती है तथा अपने अस्तित्व और पहचान के लिए सजग होकर संघर्ष करती है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

महाश्वेता देवी की रचना "द्रौपदी" में आदिवासी स्त्री द्रौपदी के प्रतिरोध की कथा है। जब सैनिक उसके साथ बलात्कार करते हैं तो वह निर्वस्त्र होकर कहती है – "तुम मुझे नग्न कर सकते हो, लेकिन मेरे प्रतिरोध को नहीं।" आलोचक **गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक** ने इस पर टिप्पणी की – "महाश्वेता देवी की 'द्रौपदी' स्त्री को पीड़िता नहीं, प्रतिरोध की जीवित प्रतिमा बनाती है।" महाश्वेता देवी की 'द्रौपदी' न केवल एक साहित्यिक कृति है बल्कि भारतीय समाज में नारी की जटिल स्थिति, उसकी पीड़ा और संघर्ष का जीवंत दस्तावेज है। यह कहानी दलित-नारी की सामाजिक, राजनीतिक और आत्मसम्मान की लड़ाई का प्रतीक बन गई है।

*1.***संघर्षशील नारी का प्रतीक** - द्रौपदी, एक आदिवासी नारी है। वह जातिवाद, लैंगिक अन्याय और सामंती शोषण का विरोध करती है। उसका जीवन पीड़ा और प्रतिरोध का संदेश देता है। कथा में द्रौपदी अपने सम्मान और न्याय के लिए अपने शरीर को हथियार बनाकर विद्रोह करती है। वह कहती है - **"अगर मेरा शरीर ही नहीं है, तो मेरा अस्तित्व भी नहीं है। और मेरा अस्तित्व ही मेरा संघर्ष है।"**

*2.***आत्मसम्मान और विद्रोह** - द्रौपदी का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक है। वह अपने हक के लिए चुप नहीं रहती, बल्कि जोरदार आवाज उठाती है। नारी की सशक्त भूमिका को दर्शाता है। महाश्वेता देवी ने द्रौपदी के माध्यम से यह दिखाया कि भारतीय नारी अब केवल घर की चार दीवारी तक सीमित नहीं है। वह सार्वजनिक मंच पर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली शक्ति बन चुकी है।

इस प्रकार, महाश्वेता देवी की रचना 'द्रौपदी' में नारी की **संघर्ष, प्रतिरोध और आत्मसम्मान** की मिसाल प्रस्तुत की गयी है। यह कथा भारतीय स्त्री विमर्श में एक निर्णायक दस्तावेज है, जो बताती है कि आज की नारी परंपरागत दायित्वों से ऊपर उठकर अपने हक और पहचान के लिए लड़ सकती है।

मृदुला गर्ग की रचना "अनित्य" - कहानी में स्त्री अपनी यौनिकता और स्वतंत्रता के प्रश्न उठाती है। यह उस "नई स्त्री" की छवि है जो अब मौन नहीं रहती। मृदुला गर्ग की 'अनित्य' भारतीय नारी के जीवन में बदलाव, उसकी आंतरिक पीड़ा और संघर्ष का संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करती है। इस कृति में नारी का स्वरूप केवल पारंपरिक नहीं है, बल्कि उसमें आत्म-खोज और स्वाधीनता की चाह भी स्पष्ट दिखाई देती है।

1. परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष में नारी - 'अनित्य' की नायिका सामाजिक और पारिवारिक बंधनों के साथ-साथ व्यक्तिगत आज़ादी की खोज में संघर्ष करती है। यह संघर्ष भारतीय नारी की जीवन-संघर्ष का प्रतीक है। नायिका अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी अपने आत्म-सम्मान और पहचान की तलाश में रहती है।

2. आत्म-खोज और स्वतंत्रता की चाह - भारतीय नारी अब केवल घर और परिवार तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि अपने विचारों, आकांक्षाओं और निर्णयों में स्वतंत्र होना चाहती है। नायिका पारंपरिक रीति-रिवाजों से ऊपर उठकर अपने जीवन के चुनाव स्वयं करना चाहती है, जिससे उसकी स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान प्रकट होते हैं।

3. संघर्ष और बदलाव का प्रतीक - 'अनित्य' में नारी न केवल निजी जीवन में बल्कि सामाजिक बदलाव में भी भागीदारी करती है। जो यह दर्शाता है कि भारतीय नारी अब सशक्त, जागरूक और परिवर्तन की प्रवर्तक बन रही है। मृदुला गर्ग की 'अनित्य' में भारतीय नारी की भूमिका **संघर्ष, आत्म-खोज और स्वतंत्रता** की मिसाल है। यह रचना बताती है कि भारतीय स्त्री आज परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए अपनी पहचान बनाने के लिए निरंतर संघर्षरत है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:11(1), November, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

इस प्रकार, समकालीन कथा-साहित्य में भारतीय नारी का अस्तित्व बहुआयामी और सशक्त रूप में उभरा है। वह अब मौन नहीं, बल्कि प्रतिरोध करती है; वह केवल परिवार की 'छाया' नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व की **निर्माता** है। साहित्य ने यह प्रमाणित किया कि भारतीय नारी का अस्तित्व आज **करुणा से प्रतिरोध**, **वस्तु से व्यक्तित्व** और **परंपरा से स्वतंत्रता** की ओर विकसित हुआ है। शुद्ध, शीतल, -अचल तरंगिणी की तरह प्रवाहित होते हुए आज की नारी सागर से मिलकर अपने मूलरूप को न खोकर अपने सर्वगुणों से विभूषित होकर सागर में समाकर भी गंगासागर बन जाती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. प्रेमचंद – *निर्मला*, सरस्वती प्रेस।
2. मन्नू भंडारी – *आपका बंटी*, राजकमल प्रकाशन।
3. राजेन्द्र यादव – *सारा आकाश*, राजकमल प्रकाशन।
4. चित्रा मुद्गल – *आवाँ*, वाणी प्रकाशन।
5. मैत्रेयी पुष्पा – *इदन्नमम्*, वाणी प्रकाशन।
6. मैत्रेयी पुष्पा – *चाक*, वाणी प्रकाशन।
7. महाश्वेता देवी – *द्रौपदी* (कहानी संग्रह)।
8. मृदुला गर्ग – *अनित्य*, कहानी संग्रह।
9. नामवर सिंह – *आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ*, राजकमल प्रकाशन।
10. रमेश उपाध्याय – *समकालीन हिंदी कहानी और स्त्री विमर्श*, वाणी प्रकाशन।
11. अर्चना वर्मा – *हिंदी साहित्य में नारी विमर्श*, साहित्य भवन।